स्त्री संबंधी योगः बृहज्जातकम्

अभिमन्यु

1. स्त्री नाश के तीन योग :

(क) यदि शुक्र से चतुर्थ, अष्टम भावों में कोई उग्र पापग्रह स्थित हों (सूर्य, मंगल, शनि) तो उस मनुष्य की पत्नी अग्नि के संयोग से मृत्यु को प्राप्त होती है।

(ख) दो उग्र ग्रहों के बीच शुक्र स्थित हो तो ऊँचे स्थान से गिरकर या गर्भपात के कारण मृत्यु को प्राप्त होती है।

(ग) यदि शुक्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि या योग न हो तो मनुष्य की पत्नी की मृत्यु फांसी आदि से होती है।

2. स्त्री, पुत्र हीन योग

(क) यदि कन्या लग्न में सूर्य स्थित हो तथा सप्तम भाव में मीनस्थ शनि हो तो स्त्री नाशक योग है।

(ख) यदि पंचम भाव में क्षीण चन्द्रमा तथा 1,7,12 भावगत राशियों में पापग्रह हों तो मनुष्य स्त्री व पुत्र से हीन होता है।

(ग) यदि एकत्र स्थित शुक्र व चन्द्रमा से सप्तम राशि में मंगल व शनि दोनों हो तो मनुष्य पत्नी रहित होता है।

3. स्त्री विषयक अनिष्ट योग

(क) कुंडली में सप्तम में बुध व शनि हों तो पति क्लीब अर्थात् पुरुषाकार स्वरूप से हीन होता है।

(ख) यदि सप्तम स्थान में आग्नेय ग्रहों (सूर्य, मंगल, केतु व इनसे युक्त बुध) इनमें से तीन या सब स्थित हों तो स्त्री विधवा होती है। यदि इनके साथ शुभ ग्रह भी हो तो पुनर्विवाह होता है।

(ग) यदि अष्टम में क्रूर ग्रह तथा द्वितीय में शुभ ग्रह हों तो स्त्री का मरण पति से पहले होता है।

4.

(क) शनि या मंगल के वर्ग (नवांशादि) में स्थित शुक्र सप्तम भाव में गया हो तथा शनि व मंगल, उस शुक्र की देखते हों तो मनुष्य परस्त्रीगामी होता है।

(ख) यदि उक्त प्रकार से स्थित शुक्र को देखने वाले शनि व मंगल के साथ चन्द्रमा भी हो तो मनुष्य तो परस्त्रीगामी होता है, उसकी पत्नी भी पर-पुरूषगामिनी होती है।

5.

(क) जिस स्त्री के लग्न में शुक्र व चन्द्रमा साथ हों तो वह सुखों की चाह रखने वाली और ईष्यालु स्वभाव की होती है।

(ख) लग्न में बुध-चन्द्र स्थित हों तो कला कुशल, सुखी व गुणों से युक्त होती है।

(ग) शुक्र व बुध साथ स्थित हों तो सौभाग्यवती, रमणीय व्यक्तित्व वाली तथा कला कुशल होती है।

(घ) यदि शुक्र, बुध व चन्द्रमा तीनों ही लग्न में हों तो बहुत धनी तथा सुखों व गुणों से युक्त होती है।

*****